

मुन्नू की बहन नीलू-1

“अन्तर्वासना पाठकों को मेरा प्यार भरा प्रणाम। मेरा नाम अजय है और मुझे लोग अज्जू कहकर बुलाते हैं। मैं अन्तर्वासना का एक पुजारी हूँ और यह मेरी पहली अर्चना है।... [\[Continue Reading\]](#) ...”

Story By: अजय शर्मा (ajays2010)

Posted: Friday, August 31st, 2007

Categories: [चुदाई की कहानी](#)

Online version: [मुन्नू की बहन नीलू-1](#)

मुन्नू की बहन नीलू-1

अन्तर्वासना पाठकों को मेरा प्यार भरा प्रणाम। मेरा नाम अजय है और मुझे लोग अज्जू कहकर बुलाते हैं। मैं अंतर्वासना का एक पुजारी हूँ और यह मेरी पहली अर्चना है। आशा करता हूँ कि आपको मेरी यह भेंट स्वीकार होगी।

मेरा यह मानना है कि दारु और चूत कभी भी झूटी नहीं होती – जब भी मौका मिले, इनसे मजे लेने चाहिए। चूत खूब चोदिये मगर गांड मारना न भूलें। और जब गांड मारें तो अपना रायता उसी के अन्दर छोड़ दें ताकि उस लौंडियाँ की गांड में एक गर्म एहसास रह जाए। यह मेरी शैली है – अब कोई माने या न माने।

अब सुनिए मेरी कहानी :

मैं शिमला का रहने वाला हूँ। मेरे घर के पास एक परिवार है जिसमें चार बच्चे हैं – दो बेटे और दो बेटियाँ। छोटा बेटा जिसका नाम मुन्नू है, मेरा बहुत अच्छा दोस्त है – और छोटी बेटा जिसका नाम नीलू है – उसके तो क्या कहने। मुझसे सिर्फ दो साल छोटी है।

मैं मुन्नू के घर बहुत जाता था। मुन्नू से मिलने और फिर नीलू को छूने। मुन्नू और मैं एक ही क्लास में पढ़ते थे। हम दोनों पढ़ाई भी साथ करते थे और लौंडिया-बाज़ी भी साथ ही करते थे। उसको शायद लगता था कि मैं उसकी बहन के चक्कर में उसके घर आता-जाता हूँ। एक दो बार उसने मुझे नीलू को हसरत भरी नज़रों से देखते हुए पकड़ा भी था। एक दिन उसने मुझसे कहा भी था कि मैं अपनी औकात में रहूँ। हर भाई अपनी बहन को शायद इसी तरह सुरक्षित रखना चाहता है।

अब मुन्नू के चाहने से भला क्या होगा। नीलू को मेरा उसे छूना शायद अच्छा लगता था

तभी वो मेरे करीब आकर बैठती थी।

उस वक़्त मैं बीस साल का था और नीलू अट्ठारह साल की थी। नीलू एक पंजाबी परिवार से थी। काफी गोरी-चिट्ठी और हर जगह से उसका बदन फूट फूट के उभार मार रहा था। बहुत ही चिकनी थी वो। उसकी बाहों पर या टांगों पर बिल्कुल भी बाल नहीं थे। हाँ – बहुत पास से उनमें रोम ज़रूर दीखते थे। मेरी बस एक ही तमन्ना थी कि गुलाब जामुन का शीरा उसके नंगे जिस्म पर डालूँ और ऊपर से नीचे तक उसे चाटूँ। यह सोचकर ही मेरा खड़ा होने लगता था और मैं मुठ मारता था। मैं एक मौके की ताक में था कि कब हम अकेले मिलें।

पंजाबियों की दाद देनी पड़ेगी- क्या खाकर ये लोग इतनी सुन्दर और मस्त लौंडियाँ पैदा करते हैं। साला देखते ही लंड खड़ा होने लग जाता है। खैर, रब ने एक दिन मेरी सुन ली।

नीलू मेरे घर आई थी। उसने मेरी माँ से थोड़ी देर बातचीत की और जाने लगी। मैं उसको दरवाजे तक छोड़ने आया और उसको जोर से अपने गले लगा लिया। यह पहली बार था कि मैं उससे लिपट रहा था।

थोड़ी सी कसमसाहट के बाद उसने भी मुझे जोर से भींचना शुरू किया, फिर बोली – दो बजे घर आना ! कोई नहीं रहेगा। सिर्फ हम-तुम !

और एक हल्का सा चुम्बन मेरे गाल पर जड़कर चली गई।

उस दिन मैंने बारह बजे ही खाना खा लिया और फिर अपने कमरे में चला गया। बार-बार मैं अपने लंड को सहलाता रहा और कहता रहा- सैर करने जाएगा ?

आपको मैं बताना भूल गया कि मेरा लंड नौ इंच लम्बा है और थोड़ा मोटा भी है। भगवान् ने मुझे काला रंग दिया है लेकिन चेहरा और बदन काफी अच्छा दिया है। थैंक-यू गॉड !

दो बजने को थे। मैं घर से बाहर निकला। उस समय हमारी कालोनी में सन्नाटा छाया हुआ था। सब खा-पी कर सो रहे थे। खैर-अपन को क्या।

मैं नीलू के घर पहुंचा। दरवाजा बंद था। ज़रा सा धक्का दिया और दरवाजा खुल गया।

मैंने धीरे से कहा- नीलू ?

नीलू बोली- दरवाजा बंद करके अन्दर आ जाओ।

मैंने झट से दरवाजा बंद किया और अन्दर के कमरे में चला गया।

वहाँ नीलू एक आदमकद आईने के सामने खड़ी थी। मैं उसके पीछे जाकर खड़ा हो गया। उसे पीछे से भींचकर मैंने कहा- कब तक मुझे यूँ ही बेचैन करोगी रानी ? अब तो रहा नहीं जाता।

और मैं धीरे धीरे उसके गोल गोल चूतड़ पर पीछे से हल्के-हल्के धक्के लगाने लगा।

इसके जवाब में नीलू भी अपने आपको मेरी ओर झटके देने लगी। उसको मेरे लंड की सख्ती का अंदाजा हो गया। मैंने उसका चेहरा अपनी ओर किया और उसके गर्म गर्म गालों को चूमने लगा। धीरे-धीरे मैं होंठों पर पहुंचा। और फिर उसके होंठों पर अपने अधर रखकर मैं जिंदगी का मज़ा लूटने लगा।

उधर नीलू भी मुझे चूसती रही।

मैंने धीरे से अपना बायाँ हाथ उसकी कुर्ती के अन्दर डाला। उसके पेट पर हाथ सहलाते हुए मैं धीरे से उसके मम्मों तक ले गया। एक हल्की सी हूंक निकली लेकिन फिर वो सामान्य हो गई। मेरा हाथ उसके दोनों मम्मों की गोलाईयाँ नाप रहा था।

इतने में मानो मेरे दायें हाथ ने कहा- मैं क्या करूँ ?

तो मैंने अपने दूसरे हाथ से उसकी जाँघों का मुआयना किया। क्या सुडौल जाँघें थी। धीरे-धीरे मेरा हाथ उसकी चूत पर पहुँचा। शायद उसे भी यही चाहिए था। मैं उसकी चूत पर अपना हाथ फेरता रहा – कभी सहलाता और कभी उसे नोचता था। पायजामे के ऊपर से ही मैं उसकी चूत को रगड़ता रहा। उसके मुँह से सिर्फ ऊह-आह की ही आवाज आ रही थी।

बगल में एक पलंग था। मैं उस पर बैठ गया और धीरे से नीलू को अपनी गोद में बिठा लिया। फिर मैंने उसकी कुर्ती उतार दी। उसकी बगलों से एक परफ्यूम की खुशबू ने तो जैसे मुझे मदहोश ही कर दिया।

मैंने उसकी बगलों को चूमा तो वो उचक गई, क्या करते हो अज्जू ?

कहकर वो मुझसे लिपट गई।

मैंने उसके कन्धों को, गर्दन को और गले को खूब चूमा।

नीलू बोली- हे भगवान ! अज्जू क्या कर रहे हो। मैं निचुड़ जाऊंगी।

मैंने उसकी गोरी पीठ पर हाथ फेरा और उसके ब्रा के हुक्स खोल दिए। सामने से ब्रा खींची तो दो संतरे उछालकर बाहर आ गए। मैंने धीरे से उन्हें सहलाया। मैंने दोनों हाथ उन पर रख दिए और उनको मसलने लगा।

नीलू तो जैसे मानो छटपटा रही थी, वह बोलने लगी- ओह गोड ! क्या कर रहे हो अज्जू ! और करो ! बहुत मज़ा आ रहा है !

अब मैंने बारी बारी से उसके संतरों को खूब चूसा। क्या मम्मे थे। एक को दबाता तो दूसरे को चूसता। गोरी चिट्ठी नीलू मेरे ऊपर अधनंगी बैठी थी। एक सपना जैसा था। मैं मन ही

मन बोला- देख मुन्नू ! तेरी जिज्जी कैसे मेरे ऊपर नंगी बैठी है ।

अब मैंने उसे खड़ा किया और धेरे से उसका पायजामा उतारा । क्या जांघें थीं । क्या टांगें थीं । बस देखते ही बनती थीं । नीलू की टांगों पर मैंने हाथ फेरना शुरू किया । दोनों हाथ मानो किसी चिकनी मिट्टी पर फिर रहे हों । अब उसके और मेरे बीच में उसकी यह काली चड्डी थी ।

दोस्तो, एक बात कहूँगा- गौरी लड़कियों पर काली चड्डी और काली ब्रा बहुत ही सेक्सी लगती है ।

उसकी चड्डी उतारी और मैंने उसकी वो चूत देखी जिसका मैं बरसों से इंतज़ार कर रहा था । उसकी टांगें चौड़ी की और उसकी झांटों में मैं अपनी ऊँगली फिराने लगा ।

नीलू के पांव कंपकंपाने लगे ! वो सीधे बिस्तर पर लेट गई । मैंने उसकी टाँगें चाटना शुरू की । घुटने चाटते हुए मैं उसकी जाँघों पर पंहुचा । फिर मैंने अपना मुँह उसकी चूत पर गाड़ दिया ।

मम्मीईSSSS ईईईई !!! कहती हुई वह कराह गई ।

एक बात तो है- चुदाई से पहले किसी भी लौंडिया को मस्त करना बहुत ही ज़रूरी होता है । खैनी को जितना रगड़ोगे उतना ही मज़ा आएगा । लेकिन इन सब में थोड़ा धैर्य रखना बहुत ज़रूरी होता है ।

मैंने अपनी जीभ उसकी अनचुदी बुर में डाल दी । क्या चूत थी उसकी । ऐसा लग रहा था कि बटरस्कॉच सॉस चाट रहा हूँ ।

नीलू तो बस उछलती रही- बस करो ! बस करो ! की रट लगा रही थी ।

लेकिन साब, मैं कहाँ रुकने वाला था। उसको निचोड़कर कर ही उठना था मैंने।

अब यह अंदाजा लगाइए कि दृश्य कैसा रहा होगा- नंगी नीलू की चूत पर मेरा मुँह और मेरे दोनों हाथ उसके मम्मे दबाते हुए।

अबे मुन्नू ! देख तेरी बहन चुद रही है। कर ले जो भी तुझे करना है। बस एक बार यह सीन देख ले मेरे यार !

थोड़ी देर तक उसकी चूत को मैंने और चूसा फिर उसकी चूत से उसका पानी निकला- मर गई मैं ! अज्जू, क्या कर दिया तूने ? बजायेगा नहीं क्या ?

मैं एक सांप की तरह उसके पेट को, मम्मों को चूमता उसके चेहरे के सामने आया- नीलू, कैसा लगा ?

नीलू ने मुझे जोरकर भींचा और कहा- अज्जू, मुझे बहुत अच्छा लगा ! खूब मज़ा आया !

मैंने उसका हाथ अपने लंड पर रखा और कहा- नीलू यह तुम्हारा है ! इससे खूब खेलो।

नीलू ने मेरी पैंट उतारी। इस बीच मैंने अपनी टी-शर्ट खुद ही उतार दी। मेरी चड्डी तो जैसे तम्बू हो। उसने प्यार से मेरी चड्डी नीचे की और मेरा लंड देखकर काँप गई- यह तो इतना बड़ा है ! कैसे जाएगा मेरे अन्दर ?

मुझे हंसी आ गई।

उसने मेरी चड्डी पूरी तरह से उतार दी। इतने में मैंने सामने एक आईने में हम दोनों को देखा। मेरा काला सा बदन उसके गोरे चिट्टे जिस्म के सामने क्या लग रहा था।

मैंने कहा- नीलू, इसे प्यार से पकड़ो और चूसो।

गोरी गोरी पतली पतली उँगलियों के बीच मेरा काला-मोटा लंड बहुत अच्छा लग रहा था।

नीलू मेरे सामने नीचे अपने घुटनों पर बैठ गई। नीलू के मेरा लंड पकड़ते ही मेरे शरीर में 25000 वोल्ट का करंट दौड़ गया। उसने मेरे लंड को खूब आगे पीछे किया और फिर उसकी टोप को चूमा। गुलाबी होटों का स्पर्श पाकर मेरा लंड और बड़ा हो गया।

मैंने आव न देखा ताव ! उसका सर पकड़कर एक ऐसा झटका दिया कि मेरा लंड उसके मुँह के अन्दर चला गया। इस झटके से वो थोड़ा घबराई। लंड सीधा उसके गले पर टकराया जिससे उसकी सांस अटक गई।

मैंने उसकी पीठ पर हाथ फेरा और बोला- चूस नीलू चूस ! मज़ा ले और मज़ा दे।

वो भी मेरे लंड का शायद मज़ा लेने लग गई। उसने मेरे दोनों चूतड़ पकड़े और सिर्फ अपना मुँह मेरे लंड पर अन्दर-बाहर करने लगी। अब उसने मुझे धीरे-धीरे मेरे बदन पर हाथ फेरना शुरू किया। मुझे गुदगुदी होने लगी। इतनी देर से मेरा लंड खड़ा रहने के कारण फटने पर आमादा हो गया। मैंने कहा- नीलू, मैं फटने वाला हूँ।

नीलू को इन सब बातों से कोई मतलब नहीं था। मेरा लंड वो कुल्फी की तरह चूस रही थी।

मैं मन ही मन बोला – मुन्नू देख अपने बहन को। क्या चूस रही है तेरे दोस्त के लंड को। उखाड़ ले मेरा जो उखाड़ सकता है।

काश कि मुन्नू मेरे सामने होता।

हाँ, उसकी तस्वीर ज़रूर एक दीवार पर लगी हुई थी। मैंने उस तस्वीर को देखा और कहा- मुँह में डाल दूँ ?

इतने में मैंने एक आह निकाली और मेरा पूरा माल मेरे लंड से निकलने लगा ।

नीलू ने थोड़ा पिया और बाकी बाहर निकालकर लंड देखने लगी कि कैसे पिचकारी की तरह लंड से माल निकलता है । उसने मेरी मुट्ठ मारी और मेरा पूरा माल निकाल दिया । मेरा लंड अब धीरे धीरे सामान्य होने लगा । उसने मेरे टोप के ऊपर अपनी जीभ फिराई । मैं हिल गया । और फिराई और फिर उसने मेरा लंड फिर से अपने मुँह में ले लिया । मैंने उसे किसी तरह अलग किया और उसके साथ बिस्तर पर लेट गया ।

पाठको, अन्तर्वासना डॉट कॉम पर अगली कड़ी में मैं लिखूंगा कि किस तरह से मैंने नीलू को चोदा ।

ajays2010@yahoo.in

कहानी का अगला भाग : [मुन्नू की बहन नीलू-2](#)

